NATIONAL SENIOR CERTIFICATE EXAMINATION
NOVEMBER 2016

HINDI FIRST ADDITIONAL LANGUAGE: PAPER II

MARKING GUIDELINES

Time: 2 hours 70 marks

These marking guidelines are prepared for use by examiners and sub-examiners, all of whom are required to attend a standardisation meeting to ensure that the guidelines are consistently interpreted and applied in the marking of candidates' scripts.

The IEB will not enter into any discussions or correspondence about any marking guidelines. It is acknowledged that there may be different views about some matters of emphasis or detail in the guidelines. It is also recognised that, without the benefit of attendance at a standardisation meeting, there may be different interpretations of the application of the marking guidelines.

IEB Copyright © 2016

भाग क

निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं दो पर पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए ।

प्रश्न १
कविता

१.१ माता

१.१.१ " माता शीर्षक कविता के आधार पर नारी हृदय की विशेषताओं का परिचय दीजिए ।

मेरा यह पुत्र मेरा जीवन मेरा सुख धन दौलत है और मेरे यौवन की यादें है । मेरे पुर्व जन्म का बचपन आज मुझे खेल रहा है । मेरे दिल का टुकड़ा मुझे ढ़केल रहा है । इसे देखकर लगता है कि जैसे एक बार फिर से मेरे जीवन का नूतन प्रारंभ हो रहा हो । यह अत्यन्त सजीव प्राणों से युक्त । तेजोमय तथा छोटी सी मस्तनी वस्तु जैसे हम पति पत्नी दोनों की एक सम्मिलित मधुर मूर्ति विधाता ने बना दी हो । मेरा यह नन्हा बच्चा मेरा ही छोटा रूप छोटी प्रतिमा है और मैं अपनी ही इस छोटी प्रतिमा पर अपने आपको निछावर क्यों कर देती हूँ । (८)

१.१.२ *माता दुखी है - वह विधाता से क्या पूछती है ? विस्तार पूर्वक समझाइए ।*

माता दुखी है । यह विधाता से पूछती है तू मेरे दिल के बारे में क्या जानेगा । मैंने भगवान की मूर्ति को बड़े प्रेम से सजाया उसो भगवान को मैने लाचार होकर सौंप । देया दोंनो नाचते हुए आए । कृष्ण और मेरा लाल । मॉ कतती है मैं पहले अपने बच्चे को गोद में लुंगी जिसे मैंने जन्म दिया है । वह अपने पुत्रसे कहती है कि सारी जिन्दगी उसने सुख का त्याग किया । गरीबी सही और अपने यौवन जीवन में त्याग ही त्याग किया है । (६)

१.१.३ निम्नलिखित पंक्तियों को अपने शब्दों में संक्षेप व्याख्या कीजिए ।
मैं इस परम ज्योती की पगली नम्र भार बाहक हूँ ।
हूँ प्राणों के मूलय ज्योति की मैं गरीब गाहक हूँ ।

माता कहती है वह परमात्मा के दिश्र हुए दुखों को अपने सिर पर बोझ उठानेवाली है । वह लोंगों के प्राण को लेनेवाली एक गरीबनी है । चाहे मेरा नाम हो या मैं बडनाम हो जाऊँ । यह मुझ व्याकुल स्त्री की कुरबानी का गाना है । मैं कोई योगिनी जो तपस्या करने बैठी हूँ । (४)

IEB Copyright © 2016

१.२ **सत्ता**

१.२.१ सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए ः
"जवान मर्दों की लाशों के ढेर पर चढ़ कर
जो सत्ता के सिहासन तक पहुँचना चाहते है ।"

हमें बताते हैं कि राजनीति एक ऐसा खेल है । जिस में जीतने के लिए लोग कुछ भी कर सकते है । यदि उन्हे पशु का आचरन को अपनाना पड़े तो बिन संकोच वे ऐसे कर सकते हैं ।
उन्के लिए हत्या बाए हाथ का खेल बन जाते है । "क्या मरने बालों के साथ उनका कोई रिश्ता न था । (६)

१.२.२ "राख में बदले घर ।" *कवि ये शब्द क्यों प्रयोग करते हैं । अपने शब्दों में समझाइए ।*

जैसे शब्दों के प्रयोग करने से कवि कहते हैं कि इन्लोगों ने जडं से नष्ट हो गये । सत्ता पाने के लिए लोगों का घर जला दिया गया । आध में बछचे और औरतें भी जल गये । औरतें वासना की शिकार बन गए । (६)

१.२.३ अन्त में कवि इस कविता में क्या कहते हैं ।

अन्त में कवि " पॉच हजार साल की संस्कृति "पर चर्चा करते हैं । वे कहते हैं कि हमारी सब से पुरानी संस्कृति और धर्म है । हमने अपने धर्म से क्या सीखा तो यह रोने की बात बन गयी । हम ने एक बार बहुत कठिनाई से आज़ादी पाये हैं । लेकिन हो सकता है कि हम स्वर्थी की दौड़ में " उसे खो सकते हैं । (५)

[३५]

प्रश्न दो

निम्नलिखित दो प्रश्नों में से किन्हीं <u>एक</u> के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए

२.१ **कहानी ः सत्ती** - चिन्ता देवी की चरित्र चित्रण करते हुए कहानी का केंद्रिय विवार पर व्याख्य कीजिए ।

[३५]

सती

बुंदेलखंड के एक बीहड़ स्थान में चिंतादेवी के मन्दिर की बड़ी मान्यता है। कहते हैं यहाँ शताब्दियों पहले चिंतादेवी सती हुई थीं, पर अपने पति के मृत शरीर के साथ नहीं उसकी आत्मा के साथ।

चिंता यमुना नदी के तट पर बसे कालपी नगर के एक वीर बुंदेले की बेटी थी। उसकी माता बाल्यावस्था में ही स्वर्ग सिधार चुकी थीं। पिता के साथ जंगलों में भटकना उसके लिये सामान्य था। पिता हर वक्त मातृभूमि के लिये संग्राम में रहते और चिंता जंगल में उनके लौटने की प्रतीक्षा करती। चिंता का बचपन गुड़ियों से खेलने की बजाय रेत के किले बनाने एवं रणनीति बनाते गुजरता। तेरह वर्ष की आयु में युद्ध में लड़ते हुए पिता के शहीद होने पर भी चिंता तनिक भर भी विचलित नहीं हुई। इसी उम्र में उसने कमर कस ली और अपने आपको मातृभूमि की रक्षा के लिये समर्पित कर दिया।

कुछ ही समय में समस्त प्रांत में चिंता देवी की धाक जम गई। दुश्मनों के कदम उखड़ गए तीरों और गोलियों के सामने निडर खड़े देखकर उसके सिपाहियों को भी उत्तेजना मिलती रहती थी।

कई योद्धा चिंतादेवी को अपनाना चाहते थे पर चिंतादेवी ने कभी किसी पर ध्यान न दिया। इन्हीं योद्धाओं में रत्नसिंह नाम का एक राजपूत युवक भी था। पर वह अन्य वीरों

अथवा

२.२ कहानी : *सती* :

२.२.१ बुंदेलखंड में हर मंगलवार क्या होते हैं । ?

मंगलवार को सहस्त्रों स्त्री पुरुष चिंतादेवी की पूजा करने आते है । उस दिन यह निर्जन स्थान सुहावने गीतों से गूँज उठता है । टीले और टीकरे स्मणियों के रंग बिरंगे वस्त्रों से सुशोभित हो जते है । (४)

२.२.२ चिंता का बाल्यकाल का वर्णन कीजिए ?

चिंता का बाल्यकाल पिता के साथ समर भुमि में कटा । बाप उसे किसी स्वोह या वृक्ष की आड़ में छिपाकर मैदान में चला जाता । चिंता निशंक भाव से बैठी हुई मिट्टी के किले बनाती और बिगाड़ती । उसके घरौंदे किले होते थे । उसकी गुड़ियॉ ओढ़नी न ओढ़नी थी । वह सिपाहियों के गुड्डे बनाती और उन्हें रणक्षेत्र में खड़ा करती थी । निर्जन स्थान में भूखी प्यासी रात रात भर बैठी रह जाती । (६)

२.२.३ रत्नसिंह कौन थे । ?

इन्हीं योध्दाओ में रत्नसिंह नाम का एक राजपूत युवक भी था । यों तो चिंता के सैनिकों में सभी तलवार के धनी थे । बात पर जान देनेवाले । उसके इशारे पर आग में आग में कूदनेवाले । उसकी आज्ञा पाकर एक बार आकाश के तारे तोड़ लाने को भी चल पड़ते । किंतु रत्नसिह सबसे बढ़ा हुआ था । (६)

२.२.४ युध्द के समय रत्नसिंह ने क्या किया ?

पर वह कहीं नहीं जा सकता । अपने साथियों को इस कठिन अवस्था में छोड़कर वह कहीं नहीं जा सकता । एक क्षण में शत्रु उनके सामने आ पहुँचे । पर अब भी रत्नसिंह न दिखायी दिया । (६)

२.२.५ रत्नसिंह चिता के पास आकर क्या किया?

रत्नसिंह चिता के पास जाकर हॉफता हुआ बोला "प्रिये मैं तो अभी जीवित हूँ । यह तुमने क्या कर डाला ।"वह सिर पीटकर बोला "हाय पिये तुम्हें क्या हो गया है । मेरी ओर देखती क्यों नहीं । मैं तो जीवित हूँ । (६)

२.२.६ अन्त में चिन्ता देवी क्या किया ।

चिंता से आवाज आयी " तुम्हारा नाम रत्नसिंह है । पर तुम मेरे रत्नसिंह नहीं हो । "मेरे पति ने वीर गति पायी । चिंता स्पष्ट स्वर में बोली " खूब पहचानती हूँ । तुम मेरे रत्नसिंह नहीं । मेरा रत्नसिंह सच्चा शूर था । वह आत्मरक्षा के लिए । इस तुच्छ देह को बचाने के लिए अपने क्षत्रिय धर्म का परित्याग न कर सकता था । (७)

की तरह अक्खड़, मुँहफट या घमंडी न था। वह जो भी करता शाँत भाव से। मन ही मन वह चिंता देवी को चाहता था।

एक बार युद्ध के दौरान रात के अंधेरे में चिंता देवी की गुप्त हत्या करने के उद्देश्य से शत्रुओं के तीन साहसी सिपाही चिंतादेवी के खेमे के पास आये। रत्नसिंह सोया न था। उसने अपनी जान पर खेलकर अकेले ही उनसे युद्ध किया। इस युद्ध में वह बुरी तरह घायल होकर अचेत हो गया। सुबह जब चिंतादेवी को पता चला तो वह रत्नसिंह की वीरता के कारण उनसे प्रेम करने लगी। अचेत अवस्था में पड़े रत्नसिंह की जी जान से एक महीने सेवा की और उससे विवाह कर लिया।

मधुर मिलन की रात्रि समाचार आया कि शत्रु हमला करने वाले हैं। रत्नसिंह अपनी सेना के साथ तुरंत ही युद्ध के लिये चल पड़ा। पर इस बार उसका मन चिंतादेवी में ही उलझा रहा।

शत्रु सेना रत्नसिंह की सेना से बहुत बड़ी थी। पर रत्नसिंह की सेना में जोश की कमी न थी। वह बहुत जोश से लड़े पर अपने सेनापति रत्नसिंह को युद्ध में नहीं पाया। रत्नसिंह की सेना विजयी तो न हुई पर दुश्मनों के मुँह से भी वाह वाह निकली।

चिंतादेवी को जब पता चला कि युद्ध में कोई भी न बचा तो सती होने के लिये उसने चिता तैयार करवाई। जैसे ही चिंतादेवी सती होने के लिये चिता पर बैठी और आग लगाई रत्नसिंह घोड़े पर सवार वहाँ आ पहुँचा। उसकी

75

[३५]

प्रश्न तीन

निम्नलिखित नाटक मेल मिलाप में से किन्हीं <u>एक</u> के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए

३.१.१ किश्न और मंगल सिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

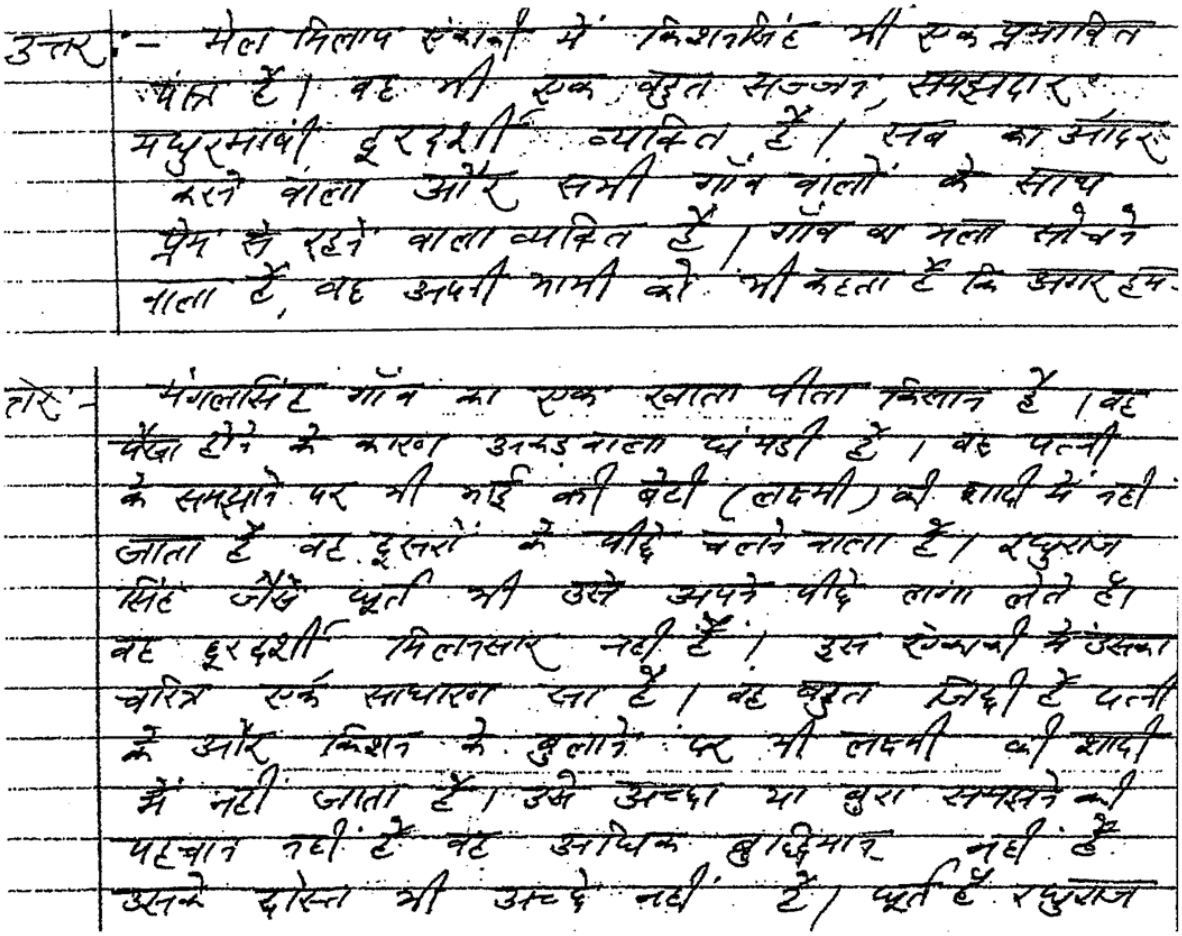

उत्तर :- मेल मिलाप एकांकी में किशनसिंह भी एक प्रभावित पात्र है। वह भी एक बहुत सज्जन, समझदार, मधुरभाषी दूरदर्शी व्यक्ति है। सब का आदर करने वाला और सभी गाँव वालों के साथ प्रेम से रहने वाला व्यक्ति है। गाँव का भला सोचने वाला है, वह अपनी भाभी को भी कहता है कि अगर हम

तीरे :- मंगलसिंह गाँव का एक खाता पीता किसान है। वह पैसा होने के कारण अकड़ वाला घमंडी है। वह पत्नी के समझाने पर भी भाई की बेटी (लक्ष्मी) की शादी में नही जाता है वह दूसरों के पीछे चलने वाला है। रघुराज सिंह जैसे धूर्त भी उसे अपने पीछे लगा लेते है। वह दूरदर्शी मिलनसार नही है। इस एकांकी में उसका चरित्र एक साधारण सा है। वह बहुत जिद्दी है पत्नी के और किशन के बुलाने पर भी लक्ष्मी की शादी में नही जाता है। उसे अच्छा या बुरा समझने की पहचान नही है वह अधिक बुद्धिमान नही है। उसके दोस्त भी अच्छे नहीं है। धूर्त है रघुराज

(१०)

३.१.२ हीरा पंडित कौन थे ?

वह गॉव का प्रोहित । वह कोशशि करते है कि दोनो भाई मिले । वह परिवारों को अपना राय बताते है । (४)

३.१.३ "इसे कहते हैं भाई" किसने कहा और क्यों ।

राधा ने कहा । जब दोनोम भाई अपने शत्रुता को छोड़ कर शादी में शामिल होजाते है । तब राधा भाई की रिश्ता को कहा यह भाई कहते है । (४)

IEB Copyright © 2016

३.१.४ मंगल और किशन का रिश्ता पर अपना विचार लिखिए?

मंगल और किशन चचेरे भाई है । आपसी मेम् मन मुटाव थे । मंगल और किशन में दुश्मनी के कारण एक दूसरे से बात नहीं करते थे । शादी में सम्मिलत होने के ल्यि किशन स्वयं मंगल को बुलाने आया पर फिर भी उसने स्वीकर नहीं किया । (६)

३.१.५ मंगल सिंह ने क्यों कहा "मैं किसी का दिया नहीं खाता" ?

वह अपने बल पर जीते है । वह राधा से कहते है कि मै अपनी ज़ीद पर रहूँगा । लोग कुछ भी कह मुझे परवाह नहीं । मूझे तेरे व्याखयनकी जरूत नहीं । (५)

३.१.६ क्या मेल मिलाप हुइ या नहीं ? अपना राय बताइए ।

जीवन में परिवारों गलतफहमी है। लेकिन समय के साथ इन गलतफहमियों को सुलझा लिया जाता है। भाइयों अंत में एक साथ आते हैं। अपनी पत्नियों की मदद से उन्हें समर्थक सक्रिय हो में एक प्रमुख भूमिका निभानी (६)

[३५]

अथवा

३.२ " भूल हो जाते है ।" मेल मिलाप में इस का विस्तार पूवक व्याख्य कीजिए ।

उत्तर :- मेल मिलाप का नाम एकांकीकार ने उचित ही रखा
है । इस एकांकी में बताया गया है कि किशन और
मंगल चचेरे भाई हैं । आपसी मन-मुटाव के
कारण दोनों में बोलचाल नहीं । किशन की बेटी
लक्ष्मी की शादी पर मंगलसिंह शामिल नहीं होता है और
न ही अपनी पत्नी राधा को शादी में जाने देता है ।
मंगलसिंह गाँव के लोगों रघुराज और दिद्दा से मिल कर शहर
में लकड़ी का कारखाना खोलता है । धोखा देकर उसके दोस्त उस
कारखाने में आग लगा देते हैं । अब उसके पास भी रुपये
नहीं हैं । लड़की सीता की शादी २ दिन तक होने वाली है और
शादी की कुछ भी तैयारी नहीं है । ऐसे मुसीबत के समय में
मंगल का चचेरा भाई किशन सिंह उसकी मदद के लिए
आता है और उसे दिलासा देते हुए सीता की शादी
स्वयं करने को कहता और राधा और चन्दो को भी
शादी के लिए सामान खरीदने के लिए शहर
चलने को कहता है ।

उसमें बताया है कि किस प्रकार दोनों भाइयों
में पहले बनती नहीं थी और किस प्रकार दोनों में
मेल हो गया । इसलिए एकांकीकार ने इसका
नाम "मेल मिलाप" ठीक ही रखा है । मेल-
मिलाप ऐसा है इसमें अपने-पराए और घर के लोग
निकट आ जाते हैं । इसलिए इस एकांकी का नाम
सार्थक है । और एकांकीकार ने भी कहा कि मेलमिलाप
में, सहयोग से परिवार, गाँव और प्रांत, तथा देश की
समृद्धि छिपी है ।

(३५)

[३५]

प्रश्न ४

निम्नलिखित दो प्रश्नों में से किन्हीं <u>एक</u> के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए।

४.१.१ इस कहानी का नाम "कफन"क्यों रखा गया ? चर्चा कीजिए।

कफन 'ह्यखाफान्ह शायद सबसे प्रसिद्ध और प्रेमचंद की कहानियों के दिल को छू लेने से एक है। एक जवान औरत उसकी पत्नी की हालत की तुलना में अधिक है जबकि मरने उसके पति अपने पिता के साथसाथ भोजन उनके मन में है निहित है। जब वह वे उसे अंतिम संस्कार के लिए ग्रामीणों से पैसा इकट्ठा लेकिन यह खाद्य और पेय पर दूर गंवाना किसी भी पश्चाताप के बिना मर जाता है। 'क्या हम एक कफन खरीदने से मिल गया होताऋ यह बस को जला दिया गया है जाएगा। यह भुदहा के साथसाथ चले गए हैं नहीं होगा। (८)

४.१.२ घीसू और माधव का चरित्र का वर्णन कीजिए ?

जब दो-चार फाके हो जाते, घीसू पेड़ पर चढ़कार लकडियाँ तोड़ लाता और माधव बाजार में बेच आता और जब तक वे पैसे रहते, दोनों इधर-उधर मारे-मारे फिरते। जब फाके की नौबत आ जाती, तो फिर लकडियाँ तोड़ते या मजदूरी तलाश करते। गाँव में काम की कमी न थी। किसानों का गाँव था, मेहनती आदमी के लिए पचास काम थे। मगर इन दोनों को लोग उसी वक्त बुलाते, जब दो आदमियों से एक का काम पाकर भी सन्तोष कर लेने के सिवा और कोई चारा न होता। विचित्र जीवन था इनका! घर में मिट्टी के दो-चार बर्तनों के सिवा कोई सम्पत्ति नहीं। फटे चीथड़ों से अपनी नग्नता को ढँके हुए जिए जाते थे। संसार की चिन्ताओं से मुक्त। कर्ज से लदे हुए। गालियाँ भी खाते, मार भी खाते, मगर कोई भी गम नहीं। दीन इतने कि वसूली की आशा न रहने पर भी लोग इन्हें कुछ-न-कुछ कर्ज दे देते थे। मटर-आलू की फसल में दूसरों के खेतों से मटर या आलू उखाड़ लाते और भून-भानकर खा लेते, या दस-पाँच ऊस उखाड़ लाते और रात को चूसते।

घीसू ने आकाश-वृत्ति से साठ साल की उम्र काट दी और माधव भी सपूत बेटे की तरह बाप ही के पदचिह्नों पर चल रहा था, बल्कि उसका नाम और भी उजागर कर रहा था। इस वक्त भी दोनों अलाव के सामने बैठकर आलू भून रहे थे, जो कि किसी के खेत से खोद लाए थे। घीसू की स्त्री का तो बहुत दिन हुए देहान्त हो गया था। माधव का ब्याह पिछले साल हुआ था। जब से यह औरत आई थी, उसने इस खानदान में व्यवस्था की नींव डाली थी। पिसाई करके या घास छीलकर वह सेर-भर आटे का इन्तजाम कर लेती थी और इन दोनों बेगैरतों का दोज़ख भरती रहती थी। जब से वह आई, ये दोनों और भी आलसी और आरामतलब हो गए थे, बल्कि कुछ अकड़ने भी लगे थे। कोई कार्य करने को बुलाता, तो निर्व्याज भाव से दुगुनी मजदूरी माँगते। वही औरत आज प्रसव-वेदना से मर रही थी और ये दोनों शायद इसी इन्तजार में थे कि वह मर जाय, तो आराम से सोएँ। (८)

४.१.३ इनके विचित्र जीवन पर प्रकाश डालिए ?

चमारों का कुनबा था और सारे गाँव में बदनाम। घीसू एक दिन काम करता तो तीन दिन आराम। माधव इतना कामचोर था कि आध घंटे काम करता तो घंटे-भर चिलम पीता। इसलिए उन्हें कहीं मजदूरी नहीं मिलती थी। घर में मुट्ठी-भर भी अनाज मौजूद हो, तो उनके लिए काम करने की कसम थी। "वास्तव में जाति समस्या के बारे में नहीं है। Gheesu और माधव भूमिहीन कृषि मजदूरों के रूप में जो मुक्त एजेंट कार्य और अगर वे मूड में नहीं हैं या यदि शर्तों से सहमत नहीं हैं काम करने से मना कर रहे हैं। वे जैसा भी मामला पहले हुआ करते थे ऊंची जातियों से काम करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता। हालांकि, दुख का जीवन और चाहते हैं उन्हें पूरी तरह से dehumanized गया है। माधव की पत्नी Budhiya के बारे में बच्चे के जन्म में मरने के लिए है। हालांकि, न तो उनमें से उसे बचाने के बारे में चिंतित है। पहले कहानियों के पात्रों दलित के विपरीत, वे एक औरत, जो उसके जीवन में एक नई साड़ी नहीं मिला के मृत शरीर को लपेटकर, एक नया कफन में कस्टम सवाल। वे उसके अंतिम संस्कार के लिए पैसे जुटाने और शराब पीने और उनके दिल की सामग्री के लिए स्वादिष्ट खाना खाने पर खर्च करते हैं। प्रेमचंद के कलात्मक इरादा दलितों की हालत चित्रित करने के लिए, लेकिन क्योंकि बहुत कठिन काम कर Gheesu और माधव से, किसानों किसी भी बेहतर किराया नहीं दिया बावजूद तेज राहत में किसानों की सामंती-औपनिवेशिक शोषण लाने के लिए नहीं है। (८)

४.१.४ बाप बेटे क्यों जंमींदार के पास गया ?

बाप-बेटे रोते हुए गाँव के जमींदार के पास गए। वह इन दोनों की सुरत से नफरत करते थे। कई बार इन्हें अपने हाथों पीट चुके थे चोरी करने के लिए, वादे पर काम पर न आने के लिए।

पूछा, " क्या है बे घिसुआ, रोता क्यों है? अब तो तू कहीं दिखाई भी नहीं देता! मालूम होता है, इस गाँव में रहना नहीं चाहता।"
घीसू ने जमीन पर सिर रखकर आँखों में आँसू भरे हुए कहा, "सरकार! बड़ी विपत्ति में हूँ। माधव की घरवाली रात को गुजर गई। रात-भर तड़पती रही, सरकार! हम दोनों उसके सिरहाने बैठे रहे। दवा-दारू जो कुछ हो सका, सब-कुछ किया, मुदा वह हमें दगा दे गई। अब कोई एक रोटी देने वाला भी न रहा, मालिक! तबाह हो गए। घर उजड़ गया। आपका गुलाम हूँ। अब आपके सिवा कौन, उसकी मिट्टी उठेगी। आपके सिवा किसके द्वार पर जाऊँ? (६)

४.१.५ इनके जीवन के स्थिति को किसको दाषी मानेंगे ? अपने शब्दों में समझाइए ।

जिस समाज में रात-दिन मेहनत करने वालों की हालत उनकी हालत से बहुत कुछ अच्छी नहीं न थी और किसानों के मुकाबले में वे लोग, जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा सम्पन्न थे, वहाँ इस तरह मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी। हम तो कहेंगे घीसू किसानों से कहीं ज्यादा विचारवान था, जो किसानों के विचार शून्य समूह में शामिल होने के बदले बैठकबाज़ों की कुत्सित मंडली में जा मिला था। हाँ, उसमें यह शक्ति न थी कि बैठकबाजों के नियम और नीति का पालन करता। इसलिए जहाँ उसकी मंडली के और गाँव के सरगना और मुखिया बने हुए थे, उस पर सारा गाँव अँगुली उठाता था। फिर भी उसे यह तकसीन तो थी कि अगर वह फ़टेहाल है तो कम-से-कम उसे किसानों की-सी जी-तोड़ मेहनत तो नहीं करनी पड़ती। उसकी सरलता और निरीहता से दूसरे लोग बेजा फायदा तो नहीं उठाते। (५)
[३५]

अथवा

४.२ मुंशी प्रेमचन्दने " कफन" में जिन सामाजिक मुद्दों को समने लाने कि कोशिश किया है उन पर चर्च कीजिए ।

कफ़न प्रेमचंद द्वारा रचित कथासंग्रह है। इसमें प्रेमचंद की अंतिम कहानी कफन के साथ अन्य १३ कहानियाँ संकलित हैं। पुस्तक में शामिल प्रत्येक कहानी मानव मन के अनेक दृश्यों, चेतना के अनेक छोरों, सामाजिक कुरीतियों तथा आर्थिक उत्पीड़न के विविध आयामों को सम्पूर्ण कलात्मकता के साथ अनावृत करती है। कफ़न कहानी प्रेमचंद की अन्य कहानियों से एकदम भिन्न है। उनके कहानी-संसार से इसका संसार सर्वथा निसंस्संग है, इसलिए उनकी कहानियों से परिचित लोगों के लिए यह अनबूझ पहेली हो जाती है, प्रेमचंद के संबंध में बनी हुई पूर्ववर्ती धारणा के आहे प्रश्नचिह्न लगा देती है। यह मूल्यों के खंडर ही कहानी है। आधुनिकता के सारे मुद्दे इसमें मिल जाते हैं। यह तो आधुनिकता बोध की पहली कहानी है। यही कारण है कुछ विद्वान इसे प्रगतिवादी कहते हैं तो डॉ.इंद्रनाथ मदान का कहना है-कहानी जिस सत्य को उजागर करती है वह जीवन के तथ्य से मेल नहीं खाता। कफन प्रेमचंद की जिन्दगी के उस बिंदु से जुड़ी हुई कहानी है जिसके आगे कोई बिन्दु नहीं होता।डॉ.बच्चन सिंह के मतानुसार- यह उनके जीवन का ही कफन नहीं सिद्ध हुई बल्कि उनके संचित आदर्शों, मूल्यों, आस्थाओं और विश्वासों का भी कफन सिद्ध हुई। जब कि डॉ.परमानंद श्रीवास्तव का कहना है कि... कफन हिंदी की सर्वप्रथम नयी कहानी है, वह पूर्णतः आधुनिक है क्योंकि उसमें न तो प्रेमचंद का जाना-पहचाना आदर्शोन्मुख यथार्थवाद है, न कथानक संबंधी पूर्ववर्ती धारणा है, न गढ़े-गढ़ाये इंस्ट्रुमेंटल जैसे पात्र हैं, न कोई परिणति, न चरमसीमा, न छिछली भावुकता और अतिरंजना और न कोई सीधा

संप्रेष्य वस्तु। वह लेखक के बदले हुए दृष्टिकोण और कहानी की बदली हुई संरचना का ठोस उदाहरण है।इसका प्रारंभ इस प्रकार होता है- झोंपड़े के द्वार पर बाप और बेटा दोनों एक बुझे हुए अलाव के सामने चुपचाप बैठे हुए हैं और अंदर बेटे की जवान बीवी बुधिया प्रसव वेदना से पछाड़ खा रही थी। रह-रहकर उसके मुँह से ऐसी दिल हिला देने वाली आवाज़ निकलती थी कि दोनों कलेजा थाम लेते थे। जाड़ों की रात थी, प्रकृत्ति सन्नाटे में डूबी हुई, सारा गाँव अंधकार में लय हो गया था। जब निसंग भाव से कहता है कि वह बचेगी नहीं तो माधव चिढ़कर उत्तर देता है कि मरना है तो जल्दी ही क्यों नहीं मर जाती-देखकर भी वह क्या कर लेगा। लगता है जैसे कहानी के प्रारंभ में ही बड़े सांकेतिक ढंग से प्रेमचंद इशारा कर रहे हैं और भाव का अँधकार में लय हो जाना मानो पूँजीवादी व्यवस्था का ही प्रगाढ़ होता हुआ अंधेरा है जो सारे मानवीय मूल्यों, सद्भाव और आत्मीयता को रौंदता हुआ निर्मम भाव से बढ़ता जा रहा है। इस औरत ने घर को एक व्यवस्था दी थी, पिसाई करके या घास छिलकर वह इन दोनों बगैरतों का दोजख भरती रही है। और आज ये दोनों इंतजार में है कि वह मर जाये, तो आराम से सोयें। आकाशवृत्ति पर जिंदा रहने वाले बाप-बेटे के लिए भुने हुए आलुओं की कीमत उस मरती हुई औरत से ज्यादा है। उनमें कोई भी इस डर से उसे देखने नहीं जाना चाहता कि उसके जाने पर दूसरा आदमी सारे आलू खा जायेगा। हलक और तालू जल जाने की चिंता किये बिना जिस तेजी से वे गर्म आलू खा रहे हैं उससे उनकी मारक गरीबी का अनुमान सहज ही हो जाता है। यह विसंगति कहानी की संपूर्ण संरचना के साथ विडंबनात्मक ढंग से जुड़ी हुई है। घीसू को बीस साल पहले हुई ठाकुर की बारात याद आती है- चटनी, राइता, तीन तरह के सूखे साग, एक रसेदार तरकारी, दही, चटनी, मिठाई। अब क्या बताऊँ कि उस भोज में क्या स्वाद मिला।...लोगों ने ऐसा खाया, किसी से पानी न पिया गया।..। यह वर्णन अपने ब्योरे में काफी आकर्षक ही नहीं बल्कि भोजन के प्रति पाठकीय संवेदना को धारदार बना देता है। इसके बाद प्रेमचंद लिखते हैं- और बुधिया अभी कराह रही थी। इस प्रकार ठाकुर की बारात का वर्णन अमानवीयता को ठोस बनाने में पूरी सहायता करता है।

कफन एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था की कहानी है जो श्रम के प्रति आदमी में हतोत्साह पैदा करती है क्योंकि उस श्रम की कोई सार्थकता उसे नहीं दिखायी देती है। क्योंकि जिस समाज में रात-दिन मेहनत करने वालों की हालत उनकी हालत से बहुत-कुछ अच्छी नहीं थी और किसानों के मुकाबले में वे लोग, जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा संपन्न थे, वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी।... फिर भी उसे तक्सीन तो थी ही कि अगर वह फटेहाल है तो कम से कम उसे किसानों की-सी जी-तोड़ मेहनत तो नहीं करनी पड़ती। उसकी सरलता और निरीहता से दूसरे लोग बेज़ा फायदा तो नहीं उठाते। बीस साल तक यह व्यवस्था आदमी को भर पेट भोजन के बिना रखती है इसलिए आवश्यक नहीं कि अपने परिवार के ही एक सदस्य के मरने-जीने से ज्यादा चिंता उन्हें अपने पेट भरने की होती

है। औरत के मर जाने पर कफन का चंदा हाथ में आने पर उनकी नियत बदलने लगती है, हल्के से कफन की बात पर दोनों एकमत हो जाते हैं कि लाश उठते-उठते रात हो जायेगी। रात को कफन कौन देखता है? कफन लाश के साथ जल ही तो जाता है। और फिर उस हल्के कफन को लिये बिना ही ये लोग उस कफन के चन्दे के पैसे को शराब, पूड़ियों, चटनी, अचार और कलेजियों पर खर्च कर देते हैं। अपने भोजन की तृप्ति से ही दोनों बुधिया की सद्गति की कल्पना कर लेते हैं-हमारी आत्मा प्रसन्न हो रही है तो क्या उसे सुख नहीं मिलेगा। जरूर से जरूर मिलेगा। भगवान तुम अंतर्यामी हो। उसे बैकुण्ठ ले जाना। अपनी आत्मा की प्रसन्नता पहले जरूरी है, संसार और भगवान की प्रसन्नता की कोई जरूरत है भी तो बाद में।

अपनी उम्र के अनुरूप घीसू ज्यादा समझदार है। उसे मालूम है कि लोग कफन की व्यवस्था करेंगे-भले ही इस बार रूपया उनके हाथ में न आवे.नशे की हालत में माधव जब पत्नी के अथाह दुःख भोगने की सोचकर रोने लगता है तो घीसू उसे चुप कराता है-हमारे परंपरागत ज्ञान के सहारे कि मर कर वह मुक्त हो गयी है। और इस जंजाल से छूट गयी है। नशे में नाचते-गाते, उछलते-कूदते, सभी ओर से बेखबर और मदमस्त, वे वहीं गिर कर ढेर हो जाते हैं।

(३५)

[३५]

Total: ७0

IEB Copyright © 2016